रिकॉर्डः– तुम्हें पाके हमने..... ओम प्रातः क्लास 1/10/1966

ओम् शान्ति। मीठे–2 बच्चों ने अपना ही गाया हुआ गीत सुना। बच्चे जानते हैं अब हम बेहद के बाप के सामने बैठे हैं। तो बच्चे कहते हैं– बाबा, आपसे जो विश्व की बादशाही पाई है वा पा रहे हैं, सतयुग में तो ऐसे नहीं पावेंगे। यह संगमयुग पर ही तुम गा सकते हो। घर में बैठे अथवा नौकरी करते हुए तुम जानते हो हम बेहद के बाप से बेहद का वर्सा फिर से ले रहे हैं। सेन्टर्स पर भी यह सावधानी मिलती है कि बाप को याद करो और हम विश्व के मालिक बन रहे हैं। यह याद रखना है। कोई नई बात नहीं। हम बाबा से कल्प–2 विश्व की बादशाही लेते हैं। नया कोई सुनेगा तो समझेंगे यह इनको शिवबाबा कहती है। अब वो तो है निराकार आत्माओं का बाप। आत्माएँ निराकार तो परमात्मा बाप भी निराकार है। आत्मा को निराकार तब कहते हैं जब तक साकार रूप ना लिया है। तो बच्चे जान गए हैं हम बेहद के निराकार बाप से यह नॉलेज सुन रहे हैं। रूहानी टीचर पढ़ा रहे हैं ..... को। तुम बच्चों को मेहनत ही यह है आत्म–अभिमानी बनने की। एक/दो के गुरु बन सकते हैं एक/दो को सावधानी देने लिए। पहले है यह रूहानी सावधानी। बेहद के बाप की याद में ही सब रहते हैं और इशारा देते हैं बाप की याद में रहो। और कहाँ बुद्धि जानी ना चाहिए। इसलिए कहा जाता है आत्म–अभिमानी भव और बाप की याद में रहो। वो है पतित–पावन बाप। वो अब सन्मुख कहते हैं मुझे याद करो। कितनी सहज युक्ति है। मनमनाभव अक्षर भी है; परन्तु जब कोई समझे। याद की यात्रा सिखाने वाला एक ही बाप है। और कोई हो ना सके। तुम बच्चे ही जानते हो हम रूहानी यात्रा पर हैं। वो हैं जिस्मानी यात्राएँ। अब हम जिस्मानी यात्रू नहीं हैं। हैं हम रूहानी यात्रु। इस याद की यात्रा से ही विकर्म विनाश होंगे, तुम विकर्माजीत बन जावेंगे। और कोई उपाय नहीं जो तुम विकर्माजीत बनो। एक है विकर्माजीत संवत, दूसरा है विक्रम संवत। फिर विकर्म शुरू होते हैं। रावण राज्य शुरू हुआ और विकर्म शुरू हुए। अब तुम विकर्माजीत बनने का पुरुषार्थ कर रहे हो। वहाँ कोई विकर्म होता नहीं। वहाँ रावण ही नहीं। दुनिया में यह कोई .... नहीं जानते। तुम बाप द्वारा यह सब जान गए हो। बाप को ही नॉलेजफुल कहा जाता है। तो बच्चों को भी नॉलेज देंगे ना। गॉड फादर का नाम भी चाहिए। नाम–रूप से न्यारा थोड़े ही है। पूजा करते हैं उनका नाम है शिव। वो ही पतित–पावन, ज्ञान का सागर है। आत्मा याद करती है उस परमपिता परमात्मा बाप को। आत्मा बाप की महिमा करती है– वो सुख का सागर, शांति का सागर है। बाप तो ज़रूर वर्सा ही देते होंगे बच्चों को। जो अच्छा कर्तव्य करके जाते हैं उनका यादगार बनाते हैं। एक शिवबाबा ही है जिसका गायन भी होता है और पूजा भी होती है। ज़रूर वो शरीर द्वारा कर्तव्य करते हैं तब तो उनका गायन है। वो एवरप्योर है। बाप कब पुजारी बनते नहीं। सदैव पूज्य है। उनके लिए ऐसे नहीं कहेंगे आपे ही पूज्य, आपे ही पुजारी। बाप कहते हैं मैं कब पुजारी नहीं बनता। मैं पूज्य बनता हूँ जबकि पुजारी लोग मेरी पूजा करते हैं। सतयुग में तो पूजा नहीं करते हो। भक्तिमार्ग में उस पतित–पावन शिवबाबा को याद करते हैं। पहले–2 अव्यभिचारी भक्ति उस एक की ही होती है। फिर व्यभिचारी बन जाते हैं। ब्रह्मा–सरस्वती को भी वो शिवबाबा नई दुनिया का मालिक बनाते हैं। भक्तिमार्ग में तो मनुष्य सबकी भक्ति करते–2 व्यभिचारी बन पड़े हैं। भक्ति का पेशगीर कितना बड़ा है। कितना विस्तार है। बीज का कोई विस्तार नहीं। बाप कहते हैं मुझे याद करो और वर्से को याद करो। बस। जैसे झाड़ का विस्तार होता है वैसे भक्ति का भी बहुत विस्तार है। ज्ञान है बीज। तुमको ज्ञान मिलता है जिससे तुम सद्गति को पाते हो। तुमको कोई माथा मारना नहीं पड़ता। ज्ञान और भक्ति है ना। सतयुग–त्रेता में यह भक्ति का झाड़ होता नहीं। आधा कल्प यह भक्ति का झाड़ चलता है। सब धर्म वालों की अपनी–2 रसम–रिवाज़ है। भक्ति कितनी बड़ी है। ज्ञान तो सबके लिए एक ही है। मनमनाभव, बस। अल्फ बाप को याद करो। बच्चा बाप को याद करेगा तो वर्सा भी ज़रूर याद आवेगा। वर्से का विस्तार हो जाता है ना। वो होती है हद की जायदाद। यहाँ तुमको बेहद की जायदाद याद (अधूरी मुरली)